



AADHYA VERMA

13 Apr 2013

03:15 PM

Dumka

Model: Web-MyKundli

Order No: 121644801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 13/04/2013
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 15:15:00 घंटे
इष्ट _____: 24:43:21 घटी
स्थान _____: Dumka
राज्य _____: Jharkhand
देश _____: India

अक्षांश _____: 24:17:00 उत्तर
रेखांश _____: 87:15:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:19:00 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 15:34:00 घंटे
वेलान्तर _____: -00:00:32 घंटे
साम्पातिक काल _____: 05:00:58 घंटे
सूर्योदय _____: 05:21:39 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:01:51 घंटे
दिनमान _____: 12:40:11 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 29:34:56 मीन
लग्न के अंश _____: 22:31:37 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी _____: वृष - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: कृतिका - 3
नक्षत्र स्वामी _____: सूर्य
योग _____: आयुष्मान
करण _____: गर
गण _____: राक्षस
योनि _____: मेष
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: गरुड़
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: उ-उपासना
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मेष

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1935	चैत्र	23
पंजाबी	संवत : 2070	वैशाख	1
बंगाली	सन् : 1419	चैत्र	30
तमिल	संवत : 2069	पंगुनी	31
केरल	कोल्लम : 1188	मीनम	30
नेपाली	संवत : 2069	चैत्र	31
चैत्रादि	संवत : 2070	चैत्र	शुक्ल 3
कार्तिकादि	संवत : 2070	चैत्र	शुक्ल 3

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 3
तिथि समाप्ति काल _____ : 19:17:50
जन्म तिथि _____ : 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : कृतिका
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 27:48:49 घंटे
जन्म योग _____ : कृतिका
सूर्योदय कालीन योग _____ : आयुष्मान
योग समाप्ति काल _____ : 27:38:13 घंटे
जन्म योग _____ : आयुष्मान
सूर्योदय कालीन करण _____ : तैतिल
करण समाप्ति काल _____ : 06:17:32 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 35:01:07
भभोग _____ : 66:25:39
भोग्य दशा काल _____ : सूर्य 2 वर्ष 9 मा 27 दि

घात चक्र

मास _____ : मार्गशीर्ष
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : हस्त
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : शकुनि
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : सर्प
लग्न _____ : वृष
सूर्य _____ : वृश्चिक
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : धनु
बुध _____ : कन्या
गुरु _____ : मकर
शुक्र _____ : मकर
शनि _____ : तुला
राहु _____ : मकर

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

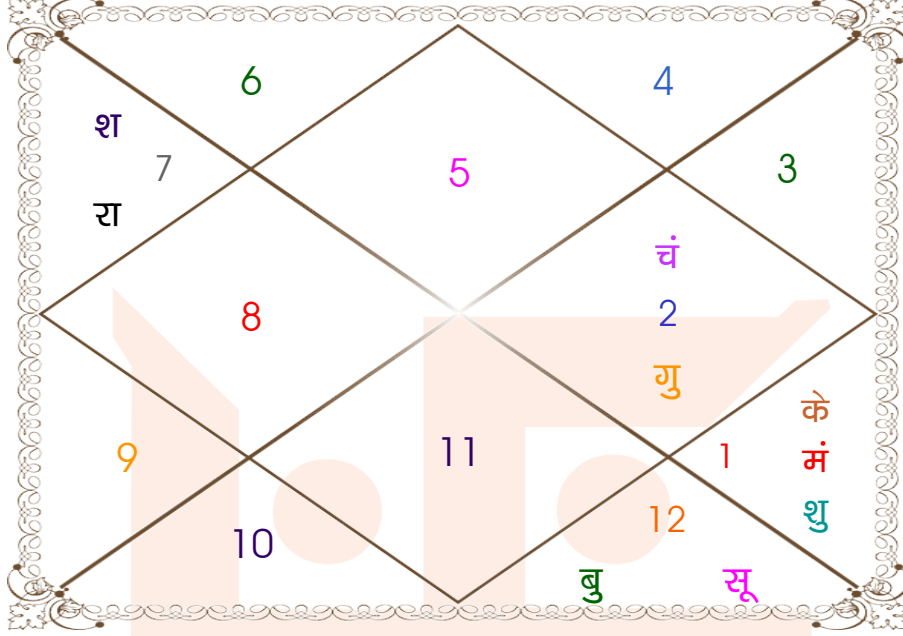
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

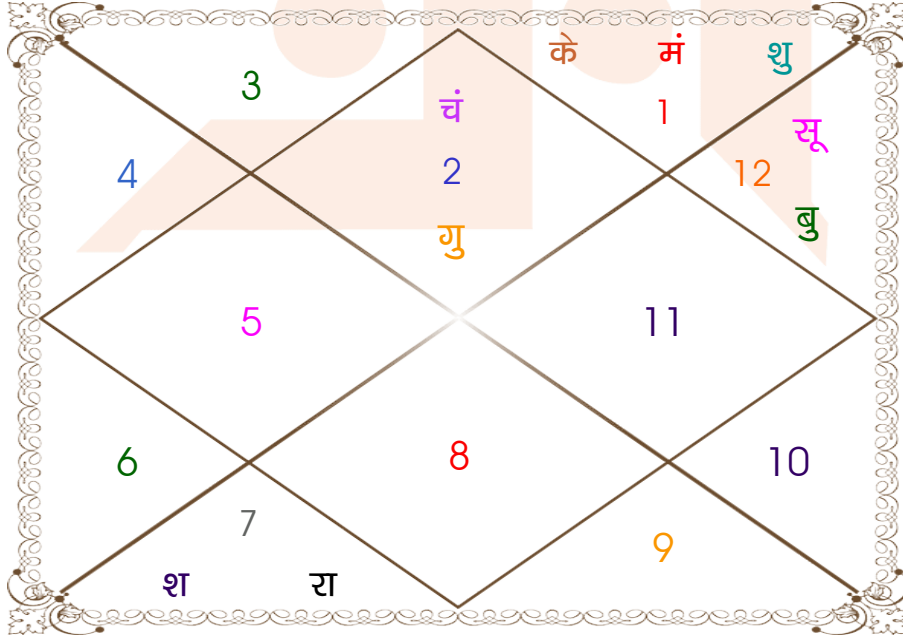
9835195382

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

बु सू	के मं शु	गु चं	
			ल
		रा श	

लग्न कुंडली

गु चं	के मं शु	बु सू
ल	श रा	

विंशोत्तरी
सूर्य 2वर्ष 9मा 27दि
सूर्य

13/04/2013

10/02/2130

सूर्य	09/02/2016
चन्द्र	09/02/2026
मंगल	09/02/2033
राहु	09/02/2051
गुरु	09/02/2067
शनि	09/02/2086
बुध	10/02/2103
केतु	10/02/2110
शुक्र	10/02/2130

योगिनी

उल्का 2वर्ष 9मा 27दि
संकटा

09/02/2023

09/02/2031

संकटा	19/11/2024
मंगला	09/02/2025
पिंगला	21/07/2025
धान्या	21/03/2026
भ्रामरी	09/02/2027
भद्रिका	21/03/2028
उल्का	21/07/2029
सिद्धा	09/02/2031

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

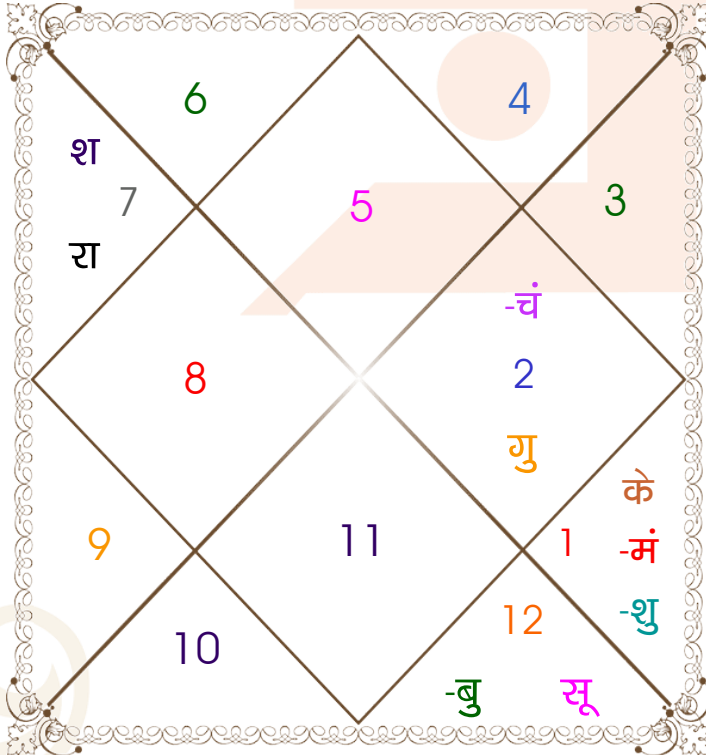
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	22:31:37	327:30:30	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	---
सूर्य			मीन	29:34:56	00:58:49	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	मित्र राशि
चंद्र			वृष	03:43:12	12:02:09	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	मूलत्रिकोण
मंगल	अ		मेष	00:37:06	00:45:22	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	केतु	मूलत्रिकोण
बुध			मीन	04:56:02	01:26:30	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	नीच राशि
गुरु			वृष	19:58:52	00:11:07	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	केतु	शत्रु राशि
शुक्र	अ		मेष	03:35:56	01:14:18	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	सूर्य	सम राशि
शनि	व		तुला	15:16:50	00:04:18	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	उच्च राशि
राहु			तुला	22:50:49	00:00:54	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	मित्र राशि
केतु			मेष	22:50:49	00:00:54	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	मित्र राशि
हर्ष			मीन	15:18:49	00:03:21	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	---
नेप			कुंभ	10:32:13	00:01:39	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	---
प्लूटो	व		धनु	17:32:25	00:00:01	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	मंगल	---
दशम भाव			वृष	22:22:16	--	रोहिणी	--	4	शुक्र	चंद्र	शुक्र	--

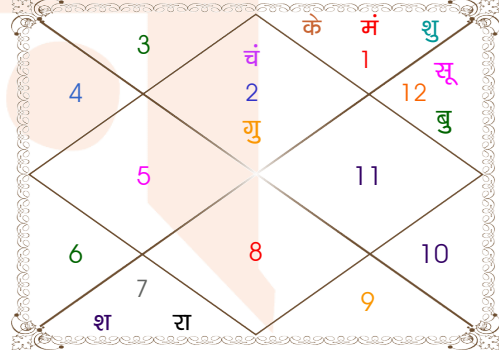
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:02:45

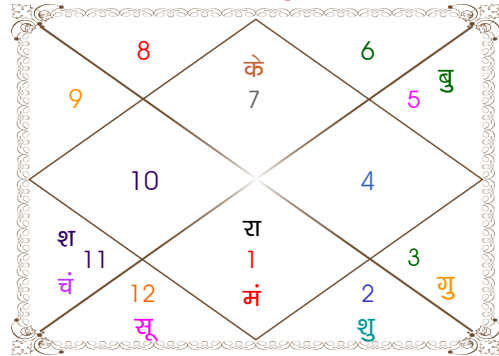
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 07:30:03	सिंह 22:31:37
2	कन्या 07:30:03	कन्या 22:28:30
3	तुला 07:26:57	तुला 22:25:23
4	वृश्चिक 07:23:50	वृश्चिक 22:22:16
5	धनु 07:23:50	धनु 22:25:23
6	मकर 07:26:57	मकर 22:28:30
7	कुम्भ 07:30:03	कुम्भ 22:31:37
8	मीन 07:30:03	मीन 22:28:30
9	मेष 07:26:57	मेष 22:25:23
10	वृष 07:23:50	वृष 22:22:16
11	मिथुन 07:23:50	मिथुन 22:25:23
12	कर्क 07:26:57	कर्क 22:28:30

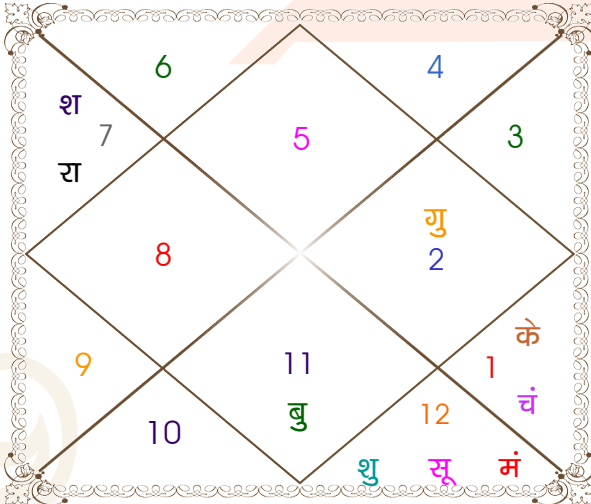
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	22:31:37
2	कन्या	20:37:11
3	तुला	21:07:28
4	वृश्चिक	22:22:16
5	धनु	23:18:11
6	मकर	23:33:58
7	कुम्भ	22:31:37
8	मीन	20:37:11
9	मेष	21:07:28
10	वृष	22:22:16
11	मिथुन	23:18:11
12	कर्क	23:33:58

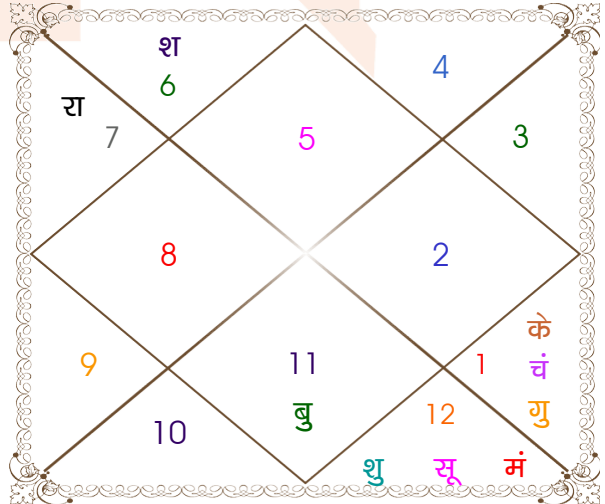
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा
उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 2 वर्ष 9 मास 27 दिन

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
13/04/2013	09/02/2016	09/02/2026	09/02/2033	09/02/2051
09/02/2016	09/02/2026	09/02/2033	09/02/2051	09/02/2067
00/00/0000	चंद्र 10/12/2016	मंगल 08/07/2026	राहु 23/10/2035	गुरु 29/03/2053
00/00/0000	मंगल 11/07/2017	राहु 26/07/2027	गुरु 17/03/2038	शनि 11/10/2055
00/00/0000	राहु 10/01/2019	गुरु 01/07/2028	शनि 21/01/2041	बुध 15/01/2058
00/00/0000	गुरु 11/05/2020	शनि 10/08/2029	बुध 11/08/2043	केतु 22/12/2058
13/04/2013	शनि 10/12/2021	बुध 07/08/2030	केतु 28/08/2044	शुक्र 22/08/2061
शनि 28/11/2013	बुध 11/05/2023	केतु 04/01/2031	शुक्र 29/08/2047	सूर्य 11/06/2062
बुध 04/10/2014	केतु 10/12/2023	शुक्र 05/03/2032	सूर्य 23/07/2048	चंद्र 11/10/2063
केतु 09/02/2015	शुक्र 10/08/2025	सूर्य 11/07/2032	चंद्र 22/01/2050	मंगल 15/09/2064
शुक्र 09/02/2016	सूर्य 09/02/2026	चंद्र 09/02/2033	मंगल 09/02/2051	राहु 09/02/2067

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
09/02/2067	09/02/2086	10/02/2103	10/02/2110	10/02/2130
09/02/2086	10/02/2103	10/02/2110	10/02/2130	00/00/0000
शनि 12/02/2070	बुध 07/07/2088	केतु 09/07/2103	शुक्र 11/06/2113	सूर्य 30/05/2130
बुध 22/10/2072	केतु 05/07/2089	शुक्र 07/09/2104	सूर्य 12/06/2114	चंद्र 29/11/2130
केतु 01/12/2073	शुक्र 05/05/2092	सूर्य 13/01/2105	चंद्र 10/02/2116	मंगल 06/04/2131
शुक्र 30/01/2077	सूर्य 11/03/2093	चंद्र 14/08/2105	मंगल 11/04/2117	राहु 29/02/2132
सूर्य 12/01/2078	चंद्र 10/08/2094	मंगल 10/01/2106	राहु 11/04/2120	गुरु 17/12/2132
चंद्र 14/08/2079	मंगल 08/08/2095	राहु 29/01/2107	गुरु 11/12/2122	शनि 14/04/2133
मंगल 22/09/2080	राहु 24/02/2098	गुरु 05/01/2108	शनि 10/02/2126	00/00/0000
राहु 30/07/2083	गुरु 02/06/2100	शनि 13/02/2109	बुध 11/12/2128	00/00/0000
गुरु 09/02/2086	शनि 10/02/2103	बुध 10/02/2110	केतु 10/02/2130	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 2 वर्ष 10 मा 1 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - मंगल 09/02/2026 08/07/2026	मंगल - राहु 08/07/2026 26/07/2027	मंगल - गुरु 26/07/2027 01/07/2028	मंगल - शनि 01/07/2028 10/08/2029	मंगल - बुध 10/08/2029 07/08/2030
मंगल 18/02/2026 राहु 12/03/2026 गुरु 01/04/2026 शनि 24/04/2026 बुध 16/05/2026 केतु 24/05/2026 शुक्र 18/06/2026 सूर्य 26/06/2026 चंद्र 08/07/2026	राहु 03/09/2026 गुरु 25/10/2026 शनि 24/12/2026 बुध 17/02/2027 केतु 11/03/2027 शुक्र 14/05/2027 सूर्य 02/06/2027 चंद्र 04/07/2027 मंगल 26/07/2027	गुरु 10/09/2027 शनि 03/11/2027 बुध 21/12/2027 केतु 10/01/2028 शुक्र 07/03/2028 सूर्य 24/03/2028 चंद्र 21/04/2028 मंगल 11/05/2028 राहु 01/07/2028	शनि 03/09/2028 बुध 31/10/2028 केतु 23/11/2028 शुक्र 30/01/2029 सूर्य 19/02/2029 चंद्र 25/03/2029 मंगल 17/04/2029 राहु 17/06/2029 गुरु 10/08/2029	बुध 01/10/2029 केतु 22/10/2029 शुक्र 21/12/2029 सूर्य 08/01/2030 चंद्र 07/02/2030 मंगल 28/02/2030 राहु 24/04/2030 गुरु 11/06/2030 शनि 07/08/2030
मंगल - केतु 07/08/2030 04/01/2031	मंगल - शुक्र 04/01/2031 05/03/2032	मंगल - सूर्य 05/03/2032 11/07/2032	मंगल - चंद्र 11/07/2032 09/02/2033	राहु - राहु 09/02/2033 23/10/2035
केतु 16/08/2030 शुक्र 10/09/2030 सूर्य 17/09/2030 चंद्र 30/09/2030 मंगल 09/10/2030 राहु 31/10/2030 गुरु 20/11/2030 शनि 13/12/2030 बुध 04/01/2031	शुक्र 16/03/2031 सूर्य 06/04/2031 चंद्र 11/05/2031 मंगल 05/06/2031 राहु 08/08/2031 गुरु 04/10/2031 शनि 10/12/2031 बुध 09/02/2032 केतु 05/03/2032	सूर्य 11/03/2032 चंद्र 22/03/2032 मंगल 29/03/2032 राहु 17/04/2032 गुरु 04/05/2032 शनि 25/05/2032 बुध 12/06/2032 केतु 19/06/2032 शुक्र 11/07/2032	चंद्र 28/07/2032 मंगल 10/08/2032 राहु 11/09/2032 गुरु 09/10/2032 शनि 12/11/2032 बुध 12/12/2032 केतु 24/12/2032 शुक्र 29/01/2033 सूर्य 09/02/2033	राहु 06/07/2033 गुरु 15/11/2033 शनि 20/04/2034 बुध 07/09/2034 केतु 03/11/2034 शुक्र 17/04/2035 सूर्य 05/06/2035 चंद्र 26/08/2035 मंगल 23/10/2035
राहु - गुरु 23/10/2035 17/03/2038	राहु - शनि 17/03/2038 21/01/2041	राहु - बुध 21/01/2041 11/08/2043	राहु - केतु 11/08/2043 28/08/2044	राहु - शुक्र 28/08/2044 29/08/2047
गुरु 17/02/2036 शनि 04/07/2036 बुध 06/11/2036 केतु 27/12/2036 शुक्र 22/05/2037 सूर्य 05/07/2037 चंद्र 16/09/2037 मंगल 06/11/2037 राहु 17/03/2038	शनि 29/08/2038 बुध 24/01/2039 केतु 25/03/2039 शुक्र 15/09/2039 सूर्य 06/11/2039 चंद्र 01/02/2040 मंगल 01/04/2040 राहु 05/09/2040 गुरु 21/01/2041	बुध 02/06/2041 केतु 27/07/2041 शुक्र 29/12/2041 सूर्य 13/02/2042 चंद्र 02/05/2042 मंगल 25/06/2042 राहु 12/11/2042 गुरु 16/03/2043 शनि 11/08/2043	केतु 02/09/2043 शुक्र 05/11/2043 सूर्य 24/11/2043 चंद्र 26/12/2043 मंगल 17/01/2044 राहु 15/03/2044 गुरु 05/05/2044 शनि 05/07/2044 बुध 28/08/2044	शुक्र 27/02/2045 सूर्य 23/04/2045 चंद्र 23/07/2045 मंगल 25/09/2045 राहु 08/03/2046 गुरु 01/08/2046 शनि 22/01/2047 बुध 26/06/2047 केतु 29/08/2047

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382
9835195382

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	5
मित्र अंक	1, 4, 6, 5
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

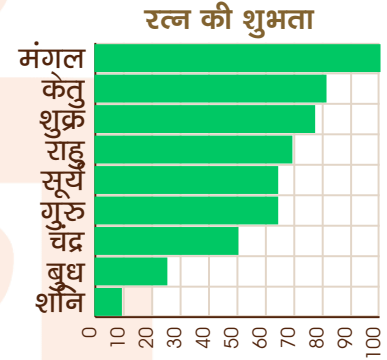
9835195382

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	भाग्योदय, सुख
लहसुनिया	केतु	81%	भाग्योदय
हीरा	शुक्र	77%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
गोमेद	राहु	69%	पराक्रम, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	64%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	64%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
मोती	चंद्र	50%	व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च
पन्ना	बुध	25%	दुर्घटना, हानि, धन हानि
नीलम	शनि	9%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	09/02/2016	77%	57%	100%	25%	70%	64%	0%	56%	69%
चंद्र	09/02/2026	70%	63%	100%	38%	64%	77%	9%	56%	69%
मंगल	09/02/2033	70%	57%	100%	0%	70%	77%	9%	56%	88%
राहु	09/02/2051	52%	26%	88%	25%	64%	83%	22%	81%	69%
गुरु	09/02/2067	70%	57%	100%	0%	77%	64%	9%	69%	81%
शनि	09/02/2086	52%	26%	88%	38%	64%	83%	34%	75%	69%
बुध	10/02/2103	70%	26%	100%	50%	64%	83%	9%	69%	81%
केतु	10/02/2110	52%	26%	100%	25%	64%	83%	0%	56%	94%
शुक्र	10/02/2130	52%	26%	100%	38%	64%	89%	22%	75%	88%

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	बदनामी
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धनार्जन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म काल में मंगल की स्थिति चन्द्र कुंडली में द्वादश भाव में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपका मंगली दोष समाप्त हो जाता है। अतः ऐसे मंगल से आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इसके शुभ प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा स्वभाव से व्ययशील होंगी। आपका अधिकांश व्यय अशुभ कार्यों की अपेक्षा शुभ कार्यों पर ही अधिक होगा। साथ ही आप अपने जीवन में समस्त भोग्य पदार्थों का आनन्द पूर्वक उपभोग करेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी। आपके पति भी शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता के भाव की प्रबलता दृष्टि गोचर होगी लेकिन इससे आपके दाम्पत्य जीवन पर कोई विशेष अशुभ प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप आवश्यक सुख संसाधनों एवं भौतिक सुविधाओं से युक्त हो कर अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ फलदायक है परन्तु इसके प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है। परन्तु विवाह कार्य अत्यंत ही शान्त एवं सुखद वातावरण में होगा तथा इसमें किसी भी प्रकार की अनावश्यक बाधाएं तथा समस्याएं उत्पन्न नहीं होंगी। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन भी मधुर संबंधों से युक्त रहकर आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त सभी प्रकार के भौतिक सुखों का आप उपभोग करेंगी तथा सांसारिक भोग्य पदार्थों से भी युक्त रहेंगी। आपका शत्रु वर्ग भी निर्बल रहेगा। अतः शत्रुओं से कोई विशेष परेशानी नहीं होगी।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करने वाली होंगी तथा भौतिक सुखों का पूर्ण रूप से जीवन में उपभोग करेंगी साथ ही आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय समय पर सिद्ध होते

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

रहेंगे। मंगल की तृतीय भाव पर दृष्टि से आप एक पराकमी महिला होंगी तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा। भाई बहनों से भी आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में उनसे वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि होने से आपके शत्रु आपसे हमेशा परास्त रहेंगे एवं आपका विरोध करने या परेशानी उत्पन्न करने में असफल रहेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि होने से पति का स्वास्थ्य तो अच्छा रहेगा परन्तु उनके स्वभाव में उग्रता या क्रोध का भाव हो सकता है। आपके आपसी संबंध भी मधुर एवं प्रगाढ़ रहेंगे तथा जीवन में एक दूसरे को सुख दुःख में पूर्ण सहयोग प्रदान करके सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसे मंगली युवक से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली में नियमानुसार मांगलिक दोष समाप्त हो रहा हो। यदि आप इस प्रकार से अपना दाम्पत्य जीवन प्रारंभ करेंगी तो सौभाग्य, धनवैभव, मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा से युक्त होकर समाज में पूर्ण रूप से यश अर्जित करने में सफल रहेंगी।

इसके अतिरिक्त कुंडली मिलान पूर्ण सावधानी से करना चाहिए तथा जिस पुरुष की कुंडली में मंगल द्वादश भाव में ही स्थित हो उससे यदि अत्यावश्यक न हो तो विवाह नहीं करना चाहिए क्योंकि समान भावों में मंगल के रहने से परिवार में व्ययाधिक्य होगा जिससे आर्थिक संकट उत्पन्न हो सकता है। उससे दाम्पत्य जीवन में अनावश्यक कटुता उत्पन्न होंगी। अन्य भावों में मंगल स्थित होने से अशुभ प्रभावों को समाप्त करेगा तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी अतः ऐसा मंगल मिलान में अच्छा रहता है। इस प्रकार सोच समझकर मिलान करने से आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा जीवन में अनावश्यक बाधाएं तथा समस्याएं उत्पन्न नहीं होंगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव में केतु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में मंगल और केतु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में केतु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाएं। रंगबिरंगी चिड़ियों को दाना डालें। नारियल का दान करें या जल प्रवाह करें। ब्राह्मणों की सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति दशम भाव में है। अतः माता का आप पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन सम्पत्ति तथा अन्य आवश्यक सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगी तथा जीवन के आवश्यक कार्यों में आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आप आजीविका, व्यापार तथा यश प्राप्ति भी उन्हीं के सहयोग से अर्जित करने में सफल होंगी।

आप उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा यदा कदा आपस में

सैद्धान्तिक मतभेद होंगे किन्तु उससे आपके संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आप भी उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा हर सम्भव उनका सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगी। इस प्रकार आप एक दूसरों के लिए सामान्य रूप से शुभ ही समझी जाएंगी।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान्, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

तुला राशि में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों के रोग, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्य कुशल होता है।

केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

मेष राशि में केतु हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(09/02/2016 - 09/02/2026)

चन्द्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 09/02/2016 को आरंभ और 09/02/2026 को समाप्त होगी।

चन्द्र दशम भाव में अवस्थित है। दशम भाव प्रतिष्ठा, सार्वजनिक सम्मान, शक्ति तथा इज्जत, सफलता तथा साख, आदर तथा ख्याति, उत्तरदायित्व, पदोन्नति, नियुक्ति, उच्च पद, शासन से सम्मान का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि आपके लिए शुभ होगी और आपको शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

आपको सुखमय तथा उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। इस अवधि में किसी बड़े रोग या चोट की संभावना नहीं है और आप बिना किसी बाधा के स्वस्थ जीवन का आनन्द लेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

चन्द्र वाहन का प्रतिनिधित्व करता है। इस अवधि में आप अपनी सम्पत्तियों और आर्थिक स्थिति का विस्तार करने में सफल होंगे। आपकी चल-अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। आपके बैंक-बैलेंस में भी वृद्धि होगी और इस तरह आप समृद्धिशाली होंगे।

व्यवसाय :

चंद्र दशम अर्थात् अपने ही भाव में अवस्थित है और दशम भाव व्यवसाय और जीवन-वृत्ति का प्रतीक है। इसलिए आप अपने व्यवसाय में अत्यधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपको आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। यदि आप सेवारत हैं तो जीवन में उन्नति के अनेक अवसर आपको मिलेंगे और आप प्रगति करेंगे। यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपके मस्तिष्क में नये व्यवसायों के अनेक विचार उभरेंगे। व्यवसाय में आपकी साख तथा स्थिति में वृद्धि होगी। श्रेष्ठजन तथा सहकर्मी आपके विचारों की सराहना करेंगे और आप व्यवसाय में अगुआ होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आप का पारिवारिक जीवन सुखमय होगा क्योंकि आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपके जीवन साथी आप की व्यावसायिक वृत्ति में भी सहायक होंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आप अध्यात्म की उच्च शिक्षा भी प्राप्त करेंगे। आप पुराणों और आध्यात्मिक ग्रन्थों का अध्ययन भी करेंगे।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**महादशा :- मंगल
(09/02/2026 - 09/02/2033)**

मंगल की महादशा 09/02/2026 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 09/02/2033 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल की तृतीय, चतुर्थ और वारहवें भाव पर दृष्टि है। मंगल इस दशा के दौरान अच्छा फल देगा। इसके पूर्व आपकी दस वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपकी यात्रा, कुछ व्यय, आध्यत्मिक उन्नति और सम्भवतः सफलता में कुछ बाधा हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति, समृद्धि और परिवार से सुख की प्राप्ति तथा यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें रोगों और कष्टों से लड़ने की शक्ति होगी। आपमें भरपूर-आत्मविश्वास तथा जीवनी-शक्ति होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आप सरदर्द, संक्रामक बीमारी तथा ज्वर से पीड़ित हो सकते हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। नवम भाव में स्थित होने

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

के कारण मंगल आपको सम्पत्ति, समृद्धि, और सौभाग्य देगा तथा आपको पिता से लाभ मिलेगा। आपको सम्पत्ति, माता से लाभ मिल सकते हैं। किसी शुभ उद्देश्य के लिए व्यय भी हो सकता है। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ हो सकता है। जीविका के लिए सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी, दवा के क्षेत्र लोहा-इस्पात से सम्बद्ध व्यवसाय या पुलिस के कार्य का चयन कर सकते हैं। आपके लिए योजना तथा प्रशासन से सम्बद्ध व्यवसाय लाभदायक हो सकते हैं। तकनीकी कार्य आपके लिये उपयुक्त होगा। आप एक सफल सर्जन हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी और आपकी आय में वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का व्यय हो सकता है। आपको साझेदारी में सावधानी बरतनी चाहिए। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का विदेश से व्यापार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल की महादशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्राएं होंगी। इस दशा के दौरान आपको जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। मंगल की अन्तर्दशा में खास तौर से सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा में आप सफल होंगे और इस दशा में बहुत अच्छे करेंगे। गणित, विधि, इन्जीनियरिंग, विज्ञान तथा तकनीकी के विषय आपके लिए बहुत उपयुक्त होंगे। आपमें आत्मविश्वास होगा और आप कार्य कुशलता से अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर होगा। आपको आपके बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके जीवनसाथी को सम्बन्धियों से लाभ मिलेगा और अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आपकी माता का आप पर बहुत प्रभाव होगा। आपको उनसे लाभ मिलेगा। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम होगा और सम्पत्ति, सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदारी के व्यवसाय में धन की प्राप्ति होगी। आपके बड़े भाई-बहनों को लाभ का अवसर मिलेगा, उनके प्रभावशाली मित्र होंगे और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आपको सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आगे राहु की अन्तर्दशा में कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होगी। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सफल निवेश तथा सट्टे और कुछ परिवर्तन से लाभ होगा। शनि की अन्तर्दशा के कारण आपको कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं हो सकती हैं। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ होगा। आगे केतु की अन्तर्दशा में कुछ मानसिक तथा शारीरिक समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और जीवन वृत्ति में उन्नति हो सकती है। सूर्य की अन्तर्दशा के

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, शक्ति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सुख की प्राप्ति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्रा, व्यय तथा आध्यात्मिक उन्नति होगी।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

अंतर्दशा :- मंगल - मंगल
(09/02/2026 - 08/07/2026)

आपके लिए मंगल की महादशा 09/02/2026 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 09/02/2026 को प्रारंभ होकर 08/07/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपकी बहुत सी यात्राएं हो सकती हैं। सब सुख-सुविधाएं, धन उपलब्ध रहेंगे। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र से संबद्ध हो सकते हैं, बहुत से लोगों का भला करेंगे। विदेश यात्रा हो सकती है। आप साहसी होंगे। घरेलू सुख में मामूली कमी आ सकती है। अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। खर्च बढ़ सकते हैं। कुछ अवांछित परिवर्तन हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनके अपने भाइयों से संबंध मधुर रहेंगे। आपके पिता सम्मानित होंगे, सुखी रहेंगे और धन प्राप्त करेंगे। माता में विरोधियों को परास्त करने की शक्ति मौजूद रहेगी। भाई-बहनों को साझेदारी से लाभ होगा। उनका कारोबार चमकेगा।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी। अगर वे सेवारत हैं तो निवेश से लाभ प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो स्थिति मजबूत होगी। परामर्शदाताओं और व्यापारियों को कुछ नुकसान हो सकता है या अवांछित परिवर्तन हो सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, पैरों में मामूली चोट लग सकती है। यात्रा के समय सावधानी आवश्यक है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंतर्दशा :- मंगल - राहु
(08/07/2026 - 26/07/2027)

आपके लिए मंगल की महादशा 09/02/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 08/07/2026 को प्रारंभ होकर 26/07/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप लक्ष्य प्राप्त करने के लिए उत्साह से परिपूर्ण और दृढ़प्रतिज्ञ होंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रु और स्पर्धी परास्त होंगे। आप उद्यमी, भाग्यवान और धनी होंगे। लाभकारी लघु यात्राएं हो सकती हैं। आप साहसी होंगे और विरोधियों की परवाह नहीं करेंगे। परिवार में कोई विवाह हो सकता है।

आपके जीवनसाथी सौभाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता व्यापारिक अनुबंधों में सफल रहेंगे, यात्राएं होंगी, मुकदमे में सफलता मिलेगी, सम्मान बढ़ेगा। आपकी माता को स्वास्थ्य की

मामूली समस्या हो सकती है। आपके भाई-बहन धनी बनेंगे, सम्मान में वृद्धि होगी।

आपकी संतान को किसी से अप्रत्याशित सहायता मिल सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार में धन कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की सक्रियता और लाभ में वृद्धि होगी। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गले की छोटी-मोटी शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की पूजा करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु
(26/07/2027 - 01/07/2028)**

आपकी मंगल की महादशा 09/02/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 26/07/2027 को प्रारंभ होकर 01/07/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। प्रोन्नति और कार्यों में प्रगति की संभावना है। प्रसिद्ध लोगों से संपर्क हो सकते हैं। शुभ कार्यों के लिए यात्रा होगी, मुकदमे में विजय होगी, व्यापार में कमाई होगी। माता से संबंध मधुर होंगे। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध होंगी। शत्रुओं पर विजय होगी: चुनाव या स्पर्धा में विजय मिलेगी।

आपके जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपके पिता धन कमाएंगे, कर्ज से मुक्ति मिलेगी, कार्यक्षेत्र में तरक्की होगी। भाई-बहनों को अचानक फ़ायदा हो सकता है, परिवर्तन आएंगे, यात्रा और खर्च का संकेत है।

आपकी संतान को स्पर्धा में सफलता मिलेगी, शत्रुओं पर विजय मिलेगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता प्रगति करेंगे। व्यापारी अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अधिक परिश्रम से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीले वस्त्र, हल्दी और चने की दाल दान में दें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शनि
(01/07/2028 - 10/08/2029)**

आपके लिए मंगल की महादशा 09/02/2026 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

01/07/2028 को प्रारंभ होकर 10/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी और दृढ़ इच्छाशक्ति वाले होंगे। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उत्साह भरपूर रहेगा। भाई-बहनों से सुख मिलेगा। कार्यों में सफलता मिलेगी, सब बाधाओं को पार कर लेंगे। सांसारिक मामलों में सफलता मिलेगी। शिशु का जन्म हो सकता है। संतान से सुख मिलेगा। योग और ध्यान में रुचि लेंगे।

आपके जीवनसाथी को भौतिक सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। यात्रा का संकेत भी है। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा और उच्चपद मिलेगा। माता की योग और धर्म में रुचि होगी। भाई-बहनों को सफलता, प्रयास के बाद मिल सकती है; उन्हें संतान से सुख मिलेगा, निवेश से लाभ होगा।

आपकी संतान को गुरुजनों से पुरस्कार मिल सकता है। अगर वे सेवारत हैं तो निवेश से लाभ होगा, वांछित तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त करेंगे। परामर्शदाता स्पर्धियों पर विजयी होंगे। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। रोगों से प्रतिरोध की शक्ति उत्तम रहेगी। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिमंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

**अंतर्दशा :- मंगल - बुध
(10/08/2029 - 07/08/2030)**

आपके लिए मंगल की महादशा 09/02/2026 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 10/08/2029 को प्रारंभ होकर 07/08/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। आपको उच्चपद प्राप्त हो सकता है। आपको किसी अप्रत्याशित माध्यम जैसे विरासत, उपहार आदि से धन मिल सकता है। धर्म और अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी। अगर आप सेवानिवृत्त हो रहे हैं तो ग्रेच्युटी आदि से धनागम होगा। जीवन में सब सुख रहेंगे; उत्तम भोजन और वस्त्र प्राप्त होंगे। वाक्शक्ति उत्तम होगी, जिससे फायदा उठाएंगे।

आपके जीवनसाथी को हर प्रकार का लाभ होगा। आपके पिता के शुभकार्यों पर खर्चें बढ़ेंगे। माता को शेयर आदि में लाभ हो सकता है। भाई-बहनों को उत्तम स्वास्थ्य, सहकर्मियों और मातहतों से सहयोग, उत्तम कार्यालय, प्रोन्नति, सम्मान और लाभ का संकेत है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आपके संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति का लाभ, प्रसन्नता और कार्यक्षेत्र में उन्नति का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो पत्रलेखन बढ़ेगा। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं और व्यापारियों को हर प्रकार के लाभ होंगे।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली खांसी, सर्दी आदि संभव हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - केतु
(07/08/2030 - 04/01/2031)**

आपके लिए मंगल की महादशा 09/02/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 07/08/2030 को प्रारंभ होकर 04/01/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप सत्कार्य करेंगे और दान-धर्म में रुचि लेंगे। पिता के साथ मधुर संबंध रहेंगे। किस्मत साथ देगी; सब सुख उपलब्ध होंगे। शिक्षा द्वारा प्रसिद्धि मिल सकती है। विदेश यात्रा हो सकती है। किसी भाई या बहन का विवाह हो सकता है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़ संकल्प और साहस का परिचय देंगे। बाधाओं को पार कर लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे।

आपके जीवनसाथी धन और सुख-सुविधाओं से युक्त रहेंगे। आपके पिता उच्चपद प्राप्त करेंगे, प्रसिद्ध होंगे और धन का लाभ होगा। माता को शत्रुओं और विरोधियों पर विजय मिलेगी। आपके भाई-बहनों को साझेदारी से लाभ होगा, यात्राएं होंगी, लाभ में वृद्धि होगी, उन्हें प्रभावशाली मित्रों से लाभ होगा।

आपकी संतान की उच्च शिक्षा हो सकती है; दार्शनिक विषयों में रुचि हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो वर्तमान कार्यस्थल से लाभ हो सकता है। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं। व्यापारी संकल्प के साथ आगे बढ़ेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। मामूली चोट आदि से कुछ परेशानी हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की उपासना करें।